3

परमेश्वर पिता कौन है?

परमेश्वर! कोई भी व्यक्ति अथवा वस्तु उससे ऊपर नहीं है। सर्वोपरि अधिकार केवल उसी के पास है और वह सबसे ऊपर है।

''परमेश्वर'' शब्द सही अर्थ में एक ही व्यक्ति के लिए है, यद्यपि मनुष्य ने पत्थर, लकड़ी और मिट्टी की आकृतियों और मनुष्य के विचारों की आराधना करने का यत्न करने की भूल की है। परमेश्वर केवल एक ही है; सच्ची आराधना केवल उसी की ही हो सकती है। किसी भी और तथाकथित जीव की आराधना गलत है, चाहे वह काल्पनिक हो या जीवित।

परमेश्वर के योग्य आदर का यदि कुछ शब्दों में वर्णन करना हो तो, हमें 1 तीमुथियुस 1:17 से महान और सरल, व्याख्या और कहीं नहीं मिल सकती: ''...सनातन राजा अर्थात अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' प्राचीन इस्राएल के द्वारा परमेश्वर के बारे में सत्य को संक्षेप में एक वाक्य में दोहराया जाता है: ''यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है! तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना'' (व्यवस्थाविवरण 6:4, 5)। परमेश्वर कौन है, के प्रकाश में, यीशु ने विश्लेषण की घोषणा की, जो हर एक हृदय में बोई जानी चाहिए: ''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (मत्ती 4:10 ख)।

धर्मशास्त्र में सच्चे परमेश्वर को स्वभाव में ''तीन'' बताया गया है। अर्थात वह एक है, परन्तु उसके तीन रूप हैं – परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा। परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व एक दूसरे के समान हैं, और हर एक सदा-सदा तक रहने वाला है। इनमें से हर एक की अपनी अलग पहचान है, जिसमें उसकी अलौकिक बुद्धि, मनोभाव और इच्छा व्यक्त होती है; परन्तु, अस्तित्व, स्वभाव और उद्देश्य में ये

तीनों एक ही हैं।

परमेश्वर के बारे में इस धारणा को परमेश्वरत्व, ईश्वरीय परिवार, अर्थात त्रिएक कहा जाता है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)।[1] यह महान सच्चाई हमारे मानवीय ज्ञान से परे है परन्तु हमारे विश्वास से परे नहीं, क्योंकि इसे परमेश्वर के वचन में स्पष्ट समझाया गया है। हम विश्वास के साथ इसे स्वीकार करते हैं, इसलिए नहीं कि हमने इसकी कल्पना की, न इसलिए कि हमारा मानना है कि यह सत्य ही होगा, न इसलिए कि हमें ऐसा सत्य अपने आस पास के संसार के अध्ययन से प्राप्त हुआ। हम इस सत्य को इसलिए स्वीकार करते और इस पर विश्वास करते हैं क्योंकि हमें यह आत्मा की प्रेरणा से लिज़े गए धर्मशास्त्र में से मिला है।

पवित्र शास्त्र में इस विचार को कि परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, सीधे नहीं बताया गया, परन्तु संकेत में समझाया गया है। पुराने नियम की पुस्तकें, जो परमेश्वरत्व के विचार का सुझाव देती हैं, उनमें भी ईश्वरीय नाम है, जिसके लिए इब्रानी शब्द ''इलोहिम'' का प्रयोग किया गया है, और वहां यह शब्द बहुवचन में मिलता है। पुराने नियम में अन्य पुस्तकें परमेश्वर के लिए बहुवचन सर्वनामों का प्रयोग करती हैं जैसे: उत्पत्ति 1:26, जो कहती है, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाएं।''[2]

नये नियम में हम परमेश्वरत्व के तीन सदस्यों के बारे में पढ़ते हैं। यीशु के बपतिस्मे के समय, पवित्र आत्मा उस पर कबूतर के रूप में उतरा, जबकि पिता की आवाज़ ने घोषणा की, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (मत्ती 3:17)। जब हमारे प्रभु ने अपने चेलों से वायदा किया कि वह उन पर पवित्र आत्मा भेजेगा, तो उसने आत्मा, परमेश्वर और अपनी बात की थी: ''जब वह *सहायक* आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो *पिता* की ओर से निकलता है, तो वह *मेरी* गवाही देगा'' (यूहन्ना 15:26)।

मनुष्य के छुटकारे का काम परमेश्वरत्व के इन तीनों सदस्यों ने किया है। पतरस ने लिखा, ''परमेश्वर *पिता* के भविष्यज्ञान के अनुसार, *आत्मा* के पवित्र करने के द्वारा, आज्ञा मानने और *यीशु मसीह* के लहू के छिड़के जाने के लिए...'' (1 पतरस 1:2)। प्रार्थना करते हुए हम परमेश्वरत्व को ही सामने रखते हैं; क्योंकि पौलुस ने कहा कि *यीशु मसीह* के द्वारा हम सभी की ''एक *आत्मा* में *पिता* के पास पहुंच होती है'' (इफिसियों 2:18)।

महान आज्ञा में बपतिस्मे को त्रिएक के नाम में देने को दर्शाया गया है ''इसलिए

तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुझें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुझारे संग हूं'' (मत्ती 28:19, 20)।

पूरी बाइबल में, परमेश्वर पिता को व्यक्तिवाचक सर्वनाम पुलिंग ''वह'' में ही बताया गया है। वह पिता, सृष्टिकर्ता, यहोवा, सर्वशक्तिमान और प्रभु परमेश्वर है। वह हमेशा परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों में सबसे पहले आता है। बाइबल उसे बुद्धि, सामर्थ, प्रेम, दया, और न्याय में सबसे ऊपर दिखाती है। जिसने संसार की योजना बनाई, उसकी रूपरेखा तैयार की और उसकी रचना की, वह सभी शक्तियों और अधिकारियों पर सर्वोच्च अधिकार रखता और उन पर शासन करता है। जो उसकी आराधना करते और उसकी आज्ञा मानते हैं, वह उनका पिता है। उसी में सभी प्राणी जिनमें मनुष्य भी शामिल है, जीवित रहते हैं और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं (प्रेरितों 17:28)।

सभी लोगों, सज़ी देशों और सभी जातियों को चाहिए कि वे उसकी आराधना एक सच्चा परमेश्वर जानकर करें। उसके पास केवल मसीह के द्वारा ही पहुंचा जा सकता है। हम स्वर्गदूतों, सन्तों या अन्य किसी व्यक्ति- जीवित अथवा मृत, चाहे वह कितना भी भला क्यों न रहा हो, के द्वारा उसके पास नहीं आ सकते। परमेश्वर और मनुष्य के बीच केवल एक ही वास्तविक मध्यस्थ है, जो कि उसका पुत्र, यीशु है (1 तीमुथियुस 2:5)। मनुष्य के लिए पिता के पास जाने का एकमात्र मार्ग यीशु है। यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)।

परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य प्रभु यीशु मसीह है। परमेश्वर पिता ने उसके द्वारा पृथ्वी और मनुष्य को सृजा (कुलुस्सियों 1:16)। मनुष्य के साथ सज़्बन्ध में यीशु को, ''मनुष्य का पुत्र'' कहा जाता है; परमेश्वर के साथ उसके सज़्बन्ध में उसे, ''परमेश्वर का पुत्र'' पुकारा जाता है। परमेश्वरत्व का केवल वही एक सदस्य है, जिसने मानवीय शरीर धारण किया और शारीरिक रूप में पृथ्वी पर रहा। वही मनुष्यजाति का उद्धारकर्ता और छुटकारा दिलाने वाला है। सब लोगों को चाहिए कि वे उसी की आराधना करें और उसी को सिजदा करें। उसने वे साधन उपलब्ध करवा दिए हैं, जिनसे सारी पृथ्वी पिता की संगति में आ सकती है।

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि जो स्वर्ग में पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीव अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

परमेश्वरत्व का तीसरा सदस्य पवित्र आत्मा है। उसका स्वभाव और स्वरूप परमेश्वर और मसीह के समान ही है। उनके जैसे ही उसके लिए भी व्यक्तिवाचक सर्वनाम प्रयुक्त होता है, जो पुलिंग के रूप में है। परमेश्वरत्व के अन्य दो सदस्यों के साथ जब भी इसकी बात होती है तो यह तीसरे नज़्बर पर आता है। नये नियम में इसे मनुष्य की अगुआई करने और उसे निर्देश देने वाला कहा गया है। बाइबल द्वारा वह हमारा सहायक है। उसने पुराने और नये नियम के लेखों को लिखने की प्रेरणा दी; इसलिए पवित्र वचन को ''आत्मा की तलवार'' कहा गया है (इफिसियों 6:17), यह वह हथियार है, जिसे वह अपना काम करने के लिए उपयोग करता है। यह उनमें वास करता (रहता) है जो परमेश्वर की सन्तान बन गए हैं (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

ये तीनों, अनन्त काल से अस्तित्व में हैं और इनसे ही परमेश्वरत्व बनता है। यद्यपि हम इनके बारे में बहुत अधिक नहीं जानते, परन्तु हमें यह निश्चय है कि सबसे तेजोमय त्रिएक इन तीनों से ही बनता है। वे इकट्ठे हैं और एक ही कहलाते हैं। वे सृजी गई सभी वस्तुओं से अनन्त, विलक्षण और भिन्न हैं और इच्छा और उद्देश्य में एक हैं।

तीन व्यक्तियों के रूप में परमेश्वर के स्वभाव से बढ़कर, हम परमेश्वर पिता के बारे में और क्या जानते हैं? मुज़्यत: बाइबल उसके बारे में एक महान और सर्वोत्तम सच्चाई बताती है: *सच्चा और जीवता परमेश्वर केवल वह ही है, और हर एक व्यक्ति के द्वारा इसी प्रकार उसकी आराधना की जानी चाहिए*। कोई व्यक्ति बाइबल के किसी भी भाग, पुराने नियम या नये नियम को इस सच्चाई पर ज़ोर देते हुए देखे बिना नहीं पढ़ सकता।

आइए इस प्रश्न में और देखें कि ''परमेश्वर पिता कौन है?''

हमारा सृजनहार

परमेश्वर ने हर एक वस्तु की रचना की। उसने सब कुछ बनाया और सब कुछ

उसी का है। कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे उसने नहीं बनाया अथवा बनाने की अनुमति नहीं दी और जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह सब उसी का है।

पृथ्वी और मनुष्यजाति अकस्मात ही विकसित नहीं हुए; उन्हें परमेश्वर के कृपालु हाथों से रचा गया था। यही कारण है कि हमें वैज्ञानिक तिथि निर्धारण से पृथ्वी की आयु की चिन्ता नहीं होनी चाहिए। संसार का आरज़्भ तो चमत्कारी ढंग से हुआ था; इस कारण यह इतना पुराना लगता है, जितना यह वास्तव में है नहीं। परमेश्वर ने कुछ सीमा तक, पृथ्वी को पूर्ण रूप से विकसित ही बनाया। उसने मनुष्य को मूर्ख बनाने का यत्न नहीं किया बल्कि उसके लिए मनुष्य के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पूर्ण-विकसित पृथ्वी को बनाना आवश्यक था।

उसने प्रथम दज़्ात्ति, आदम और हव्वा को बालकों की नाईं नहीं; बल्कि बालिगों की नाईं बनाया। जिस दिन उसने उन्हें बनाया, यदि मैं और आप वहां होते तो देखते कि वे दज़्ात्ति के रूप में बीस के करीब लग रहे होंगे; परन्तु उन्हें जीवन अभी- अभी प्राप्त हुआ था- और तो और, आरज़्भ में पृथ्वी को भी परमेश्वर ने पूर्ण विकसित वनस्पति, जल, वायु और जीवन- रक्षक धूल के साथ बनाया।

इस सत्य के अतिरिक्त कि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया परमेश्वर के बारे में और भी सत्य हैं, जिन्हें समझना हमारे लिए आवश्यक है। वे सत्य क्या हैं?

सभी सच्चाइयों के पीछे वह है।

जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसको दो वर्गों में बांटा जा सकता है: एक वह जो परमेश्वर है और दूसरा वह जो परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर प्रथम और आधारभूत वास्तविकता है। शेष सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया था या उसके अधिकार से बनाया गया, इस कारण वह सब कुछ परमेश्वर नहीं है।

वह सनातन है।

> इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है (भजन संहिता 90:2)।
>
> ''परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का'' (भजन संहिता 102:27)।

परमेश्वर का कोई आदि नहीं है और उसका अन्त भी नहीं होगा। वह समय से पहले था, उसने समय को अनन्तकाल में जोड़ दिया। उसका अस्तित्व अनन्तकाल से

ही है, जिसके लिए भूत, वर्तमान और भविष्य समय के एक पल के समान हैं। वह अब अनन्त में रहता है। भूत और भविष्य को देज़ना उसके लिए वर्तमान को देखने के समान है। वह सदा से है, और सदा तक रहेगा।

वह सर्वशक्तिमान है।

> ''हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है'' (यिर्मयाह 32:17)।

> ''मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूं; क्या मेरे लिए कोई भी काम कठिन है?'' (यिर्मयाह 32:27)।

वह अपने स्वभाव के अनुसार कुछ भी कर सकता है। निस्संदेह, वह पाप का समर्थन नहीं कर सकता, और बुराई से भरमाया नहीं जा सकता, क्योंकि वह धर्मी है (हबक्कूक 1:13)। अपनी सच्चाई के कारण वह अपने स्वभाव से इन्कार नहीं कर सकता (2 तीमुथियुस 2:13), क्योंकि वह झूठ नहीं बोल सकता (तीतुस 1:2)। परन्तु अपने स्वभाव के कारण वह कुछ भी कर सकता है। उसके लिए कुछ भी करना कठिन नहीं है।

वह सर्वज्ञाता है।

> यहोवा की यह वाणी है ''क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूं, जो दूर नहीं निकट ही रहता हूं?'' फिर यहोवा की यह वाणी है, कि ''क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?'' यहोवा की यह वाणी है (यिर्मयाह 23:23, 24)।

> यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं (नीतिवचन 15:3)।

उसे सब कुछ एकदम स्पष्ट और पूरी तरह से पता होता है। उसे कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं होती। उसे किसी सलाहकार, शिक्षक या सूचना की आवश्यकता नहीं होती। जो कुछ भी जाना जा सकता है, वह उसे पहले से ही जानता है।

वह हर जगह विद्यमान है।

> मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?

> यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है। यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुआई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़ रखेगा। यदि मैं कहूं ''अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,'' तो भी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा, रात दिन के तुल्य प्रकाश देगी; क्योंकि तेरे लिए अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं (भजन संहिता 139:7-12)।
>
> ''... वह हम में से किसी से भी दूर नहीं क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, चलते - फिरते और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:27, 28)।

हम कहीं भी जाएं, परमेश्वर वहीं है। हम उससे छिप नहीं सकते और सब कुछ देखने वाली उसकी आंखों से कुछ भी छिपा नहीं सकते। न दूरी और न अंधेरा हमें उसकी उपस्थिति से छिपा सकते हैं।

केवल वही सच्चा और जीवित परमेश्वर है।

वह जीवित है (मत्ती 16:16), और वह सच्चा है (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)। जैसे पुत्र अपने पिता के जैसा हो सकता है, मनुष्य भी कई बातों में अपने सृजनहार परमेश्वर के जैसा ही है। मनुष्य की तरह परमेश्वर देखता है, सुनता है, बोलता है, अनुभव करता है, इच्छा रखता है और कार्य करता है। यद्यपि, परमेश्वर को देखा नहीं जा सकता; वह आत्मा है, जो एक ही समय में हर जगह विद्यमान हो सकता है (यूहन्ना 4:24)।

फिर, परमेश्वर पिता, कौन है? वह अनादि और सबका सृजनहार, स्वभाव में तीन, सब से बुद्धिमान, सब से शक्तिशाली, और सब जगह विद्यमान है।

क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया, इसलिए सब कुछ उसका है और उसे अधिकार है कि वह हम से अपनी आराधना करवाए। सभी भौतिक वस्तुएं उसकी सज़्त्तियां हैं, पृथ्वी के सब जीव उसी के हैं, पृथ्वी के सब लोग उसी के हैं। यह उचित है कि हम उसकी आराधना और सेवा करें, यदि हम किसी प्रकार के अन्य देवता को विशेष महिमा देते और उसकी आराधना करते हैं, तो हम एक झूठ की आराधना और सेवा कर रहे हैं।

हमारा प्रबन्धक

परमेश्वर ने केवल संसार की रचना ही नहीं की बल्कि वह इसे प्रतिदिन सम्भालता भी है। वह इसे टूटने से, गिरने से, नष्ट होने या जिस काम के लिए उसने इसे रचा था उसमें असफल होने से बचाता है (कुलुस्सियों 1:16, 17)।

यह तथ्य तर्क और प्रकाशन दोनों से ही प्रमाणित हो चुका है। तर्कसंगत सोच यह बताती है कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी की रचना की और वह निरन्तर इसका प्रबन्ध करता है। पृथ्वी की कोई भी चीज़ अपने आप को स्वयं स्थिर नहीं रख सकती। यह स्पष्ट है कि कोई सर्वशक्तिमान हाथ उसे थामे हुए है। मनुष्य भी अपनी सम्भाल स्वयं नहीं कर सकता। वह सांस लेने के लिए स्वयं वायु को नहीं बना सकता, न जल को जिसे वह पीता है, न ही सूर्य के प्रकाश को जो उसके लिए आवश्यक है। वह इन सब बातों के निरन्तर चलते रहने के लिए पूरी तरह पृथ्वी पर निर्भर है, जो उसके लिए वह सब कुछ करती है।

परमेश्वर के वचन के प्रकाशन की साक्षी यह है कि परमेश्वर ही संसार को थामे रखता है। आकाश और पृथ्वी की रचना के समय उसने अपने संसार को स्थिर रखने के लिए गति के प्राकृतिक नियम ठहराए।

> फिर परमेश्वर ने कहा, ''दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों, और वे चिह्नों, और नियत समयों और दिनों और वर्षों के कारण हों'' (उत्पत्ति 1:14)।

> फिर परमेश्वर ने कहा, ''सुनो, जितने बीज वाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं: और जितने पृथ्वी के पशु और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं जिन में जीवन के प्राण हैं उन सब के खाने के लिए मैंने सब हरे छोटे पेड़ दिए हैं'' और वैसा ही हो गया (उत्पत्ति 1:29, 30)।

प्राकृतिक नियमों को बनाए रखने के अतिरिक्त, वह संसार और इससे जुड़ी सभी शक्तियों को अपनी ईश्वरीय सम्भाल से जोड़े रखता है।

> ''तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, और समुद्र और जो कुछ उस में है,

सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा भी तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत करती है'' (नहेमायाह 9:6)।

विशेष तौर पर, वह मनुष्य और पशुओं को सज़्भालता है: ''... हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है'' (भजन संहिता 36:6)। वह पृथ्वी के सभी जीवों को भोजन देता है: ''वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं आहार देता है'' (भजन संहिता 147:9)। वह आकाश के पक्षियों का ध्यान रखता है: ''आकाश के पक्षियों को देखो, वे न बोते हैं न काटते हैं और न ही खेतों में बटोरते हैं; तो भी तुज़्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते?'' (मत्ती 6:26); ''क्या पैसे में दो गौरये (चिड़ियां) नहीं बिकतीं? तो भी तुज़्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती'' (मत्ती 10:29)। वह संसार के देशों, जातियों पर शासन करता है: ''वह जातियों को बढ़ाता और उनको नाश करता है; वह उनको फैलाता और बन्धुआई में ले जाता है'' (अय्यूब 12:23)। धर्मियों की रक्षा करता और उन्हें आशीष देता है: ''परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएंगे; दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है। धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है, संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है'' (भजन संहिता 37:38, 39)। ''तुज़्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं'' (मत्ती 10:30)। वह अपने पास आने वालों और आज्ञा मानने वालों को अनन्त जीवन देता है, ''मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी; और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा'' (यूहन्ना 10:27, 28)।

संसार के अनेक शहरों में लोगों के लिए किसी न किसी प्रकार की यातायात प्रणाली है। इस प्रणाली को चलाने के लिए प्रयोग होने वाली गाड़ियों की सज़्भाल करनी आवश्यक है। यदि उनका तेल बदलकर मरज़्मत करके, और ख़राब हुए पुर्ज़ों को बदल कर चालू हालत में नहीं रखा जाता, तो जल्दी ही वे गली के एक ओर लग जाएं। सब मशीनों की सज़्भाल आवश्यक है। पृथ्वी पर हमने ऐसी कोई मशीन नहीं देज़ी, जिसे मरज़्मत की आवश्यकता न हो। पृथ्वी भी एक बड़ी मशीन की तरह है। इसका ध्यान रखना और इसकी आवश्यकताओं को पूरा करना ज़रूरी है, और बाइबल कहती है कि स्वर्ग का परमेश्वर इसे इसके स्थान पर सज़्भाले रखता है (इब्रानियों 1:3)।

हमें परमेश्वर का आभारी होना चाहिए कि वह हमारा ध्यान रखता है और हमारी

आवश्यकताओं को पूरा करता है। मनुष्य की भलाई (प्रेरितों 14:17) के लिए, परमेश्वर की ओर से उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने पर किसी को भी संदेह नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर ही अपना सूर्य उदय करता है (मत्ती 5:45)। उसकी सेवा करने वाले सब लोगों में यह प्रमाणित है कि जो सीधी चाल चलते हैं, उनसे वह कोई अच्छी वस्तु दूर नहीं रखेगा (भजन संहिता 84:11; रोमियों 8:28)।

हमारा छुड़ाने वाला

परमेश्वर हमें छुटकारा दिलाने वाला, हमारा उद्धारकर्त्ता है। वह हमसे प्रेम करता है और हमें पाप से बचाना चाहता है। अनन्तकाल के लिए हमारी एकमात्र आशा केवल उसी में है।

हमारे लिए उसके प्रेम को समझना कठिन है। यह किसी भी मनुष्य के प्रेम से जिसे हम जानते हों, महान है। यद्यपि सभी लोगों ने पाप किया और अपने आप को अपनी इच्छा से उससे अलग किया फिर भी वह उन्हें बचाना चाहता है। उसने हमारे उद्धार हेतु अन्तिम बलिदान देने के लिए मसीह को इस जगत में भेजकर हमारे सामने उद्धार पाने का प्रस्ताव रखा है।

पूरी तरह से धर्मी होने के कारण, परमेश्वर पाप को क्षमा नहीं कर सकता। अनन्त मृत्यु भोगे बिना हम अपने पापों के दण्ड का दाम नहीं चुका सकते। परमेश्वर ने क्रूस पर हमारे पाप के दण्ड भोगने के लिए यीशु को भेज दिया। जो कोई भी उद्धार के उसके संदेश को स्वीकार करके और उसकी आज्ञा मानकर उसके पास आता है, उसे यीशु की मृत्यु के लाभ प्राप्त होंगे। इस प्रकार बाइबल परमेश्वर को हमारे उद्धारकर्त्ता के रूप में दिखाती है (तीतुस 1:3), ठीक उसी तरह जैसे यह यीशु को हमारा उद्धारकर्त्ता दिखाती है (तीतुस 2:13)। परमेश्वर ने जगत की नींव से पहले हमारे छुटकारे की योजना बनाई थी (1 पतरस 1:20)। अब वह बड़े प्यार से सब लोगों की प्रतीक्षा करता है कि वे उसके संदेश को सुनें, मन फिराएं (अपने मनों और जीवनों को बदल डालें), और उसके उद्धार को पा लें (2 पतरस 3:9)।

एक लड़के का चित्र बनाएं जिसका पिता गाली गलौज करने वाला है। उसका पिता उसके साथ बात केवल उसे डांटने के लिए ही करता है। जब भी वह लड़का गलती करता है, उसका पिता उसकी पिटाई कर देता है। कई वर्ष तक अपने पिता के

साथ इस प्रकार बिताने के बाद वह लड़का अपने पिता को एक प्रेमी पिता नहीं बल्कि एक कठोर न्यायाधीश के रूप में जानता है। वह अपने पिता से डरता है, परन्तु उससे प्रेम नहीं करता। उसे उसके साथ रहने में कोई आनन्द नहीं आता। जब भी उसके कानों में ''पिता'' शब्द गूंजता है, तो उसे लगता है कि उसे थप्पड़ पड़ा या उसकी पिटाई हुई। इस अभागे लड़के को ''पिता'' शब्द के सुन्दर अर्थ को समझने में कठिनाई होगी, जो वास्तव में यह शब्द देना चाहता था।

''परमेश्वर'' शब्द के बारे में भी कुछ लोगों की ऐसी ही भावना है। उन्हें जीवनभर यही सिखाया गया कि वे परमेश्वर को केवल एक न्यायाधीश के रूप में देखें, जो इसी प्रतीक्षा में रहता है कि कब वे गलती करें और वह उन्हें नरक में फेंक कर दण्ड दे। यीशु ने सिखाया कि हम परमेश्वर को अपने पिता की तरह देखें। उसने कहा कि प्रार्थना करते समय हमें उसे ''पिता'' कहकर पुकारना चाहिए (मत्ती 6:9)। उसने कहा कि परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमारे लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी दे सकता है (यूहन्ना 3:16)। जितना प्रेम उसने हमसे किया, उससे महान प्रेम की कल्पना नहीं की जा सकती। वह हमारी संगति चाहता है और यदि हम उसकी आज्ञा मान लें तो वह हमारे मध्य रहेगा (यूहन्ना 14:23)। यदि हम पाप में भटक कर उससे दूर निकल जाएं, तो मन फिराकर हमारे वापस आने पर वह प्रेम से क्षमा करके हमें स्वीकार कर लेगा (लूका 15:19-32)।

परमेश्वर ने हमारे लिए इतना कुछ किया है जितना कोई भी मनुष्य हमारे लिए करने के योग्य नहीं है। हमें उसके महान प्रेम का उत्तर कैसे देना चाहिए? हमें भी उससे प्रेम करना चाहिए, अपने प्रेम को दिखाने के लिए उसके वचन को मानना और उसे ही अकेला परमेश्वर जानकर उसकी आराधना करनी चाहिए। उसके सामने हमें जय और आदर से चलना चाहिए।

हमारा न्यायाधीश

परमेश्वर प्रेमी, कृपालु पिता तो है ही, वह हमारा न्यायाधीश भी होगा। समय के अन्त में हमें उसी को हिसाब देना है।

उचित यही है कि हम में से हर एक अपना हिसाब उसी को दे, जिसने हमें बनाया और जो उचित है, उसके सच्चा होने की घोषणा बाइबल करती है (प्रकाशितवाक्य 20:12)। परमेश्वर हमारा न्याय कैसे करेगा? उसका न्याय व्यक्तिगत होगा, जिसमें

हर व्यक्ति उसे हिसाब देगा (रोमियों 14:12)। उसका न्याय स्पष्ट होगा, जिसमें हर एक को, जो कुछ उसने बोला (मत्ती 12:36, 37) और किया (2 कुरिन्थियों 5:10) सब का लेखा देना होगा। उसका न्याय विश्वव्यापी होगा, जिसमें सब जातियां उसके सामने एकत्र की जाएंगी (मत्ती 25:32)।

परमेश्वर हमारा न्याय यीशु मसीह के द्वारा करेगा। धार्मिकता के अपने मापदण्ड के साथ (प्रेरितों 17:30, 31), उसका न्याय अन्तिम और सदा के लिए होगा (मत्ती 25:46)। एक बार उसके निर्णय के बाद पुनर्विचार के लिए कोई अपील नहीं होगी।

एक युवक की कहानी है, जो दो वाहनों की टक्कर में बेहोश हो गया था। दुर्घटना के एक प्रत्यक्षदर्शी ने वाहनों में आग लगने के कुछ देर पहले उस लड़के को खींच कर बचा लिया। लड़का जल कर मर सकता था।

बचाए जाने के बाद, उस युवक ने आंखें खोलीं और उस व्यक्ति के चेहरे को देखा, जिसने उसके प्राण बचाए थे। उसे वह चेहरा कभी नहीं भूला। लड़के की दुर्घटना में लगी चोटें ठीक हुईं, और कई वर्ष बीत गए। जब वह बूढ़ा हुआ तो, वह गम्भीर संकट में पड़ गया। उसने कानून तोड़ा और अपने इस अपराध के कारण वह पकड़ा गया। जब सुनवाई के लिए उसे न्यायाधीश के सामने लाया गया, तो वह चकित रह गया; क्योंकि उसने पहचान लिया था कि न्यायाधीश वही व्यक्ति था, जिसने कई वर्ष पहले उसे बचाया था। बिना हिचकिचाए वह पुकार उठा, ''महामहिम, क्या आप को मैं याद हूं? कई वर्ष पहले टक्कर हुए एक वाहन से आपने मुझे खींच कर निकाला था और मेरी जान बचाई थी।'' न्यायाधीश ने ध्यानमग्न होकर कहा, ''हां, मुझे याद है। जिस व्यक्ति को मैंने बचाया, मैं उसका भला चाहता था। परन्तु, तुझें यह तथ्य भी देखना चाहिए: वर्षों पहले, जब मैंने तुझें वाहन में से खींच कर बचाया था, तो मैं तुझारा बचाने वाला था, परन्तु आज मैं तुझारा न्यायाधीश हूं।''

बाइबल में परमेश्वर को हमारा बचाने वाला भी और हमारा न्यायाधीश भी दिखाया गया है। उसने हमें पाप से छुड़ाने के लिए अपने पुत्र को भेजा। हमें बचाने के लिए उसने सबसे बड़ा बलिदान दे दिया है। यदि हम उसकी न सुनें, उसके उद्धार को नकार दें तो क्या होगा? फिर वह हमें दोषी ठहराएगा, क्योंकि वह सदा के लिए हमारा न्यायाधीश है।

जीवन में हमें एक बड़ी ज़िम्मेदारी मिली है। यह जानते हुए कि परमेश्वर कौन है, हमें उसकी आज्ञा को मानकर उसकी इच्छा के आगे झुक जाना चाहिए। उसे सच्चा और जीवता परमेश्वर जानकर हमें उसकी आराधना करनी चाहिए। इस तरह का उत्तर

देने के लिए उसके वचन को खोलना और सावधानीपूर्वक उसका अध्ययन करना आवश्यक है। वह हमारा अनन्त न्यायाधीश ही नहीं; वरन हमारा प्रेमी उद्धारकर्त्ता भी बनना चाहता है।

सारांश

परमेश्वर के बारे में इन तथ्यों के प्रकाश में, विचार दिए बिना हम नहीं रह सकते। उसके बारे में कोई निर्णय देना ही होगा। उसे सच्चा और जीवता परमेश्वर स्वीकार करना और विश्वास और आज्ञा से उसकी सेवा करना ही उचित उत्तर होगा।

स्कूल में एक अध्यापिका अपनी कक्षा में बच्चों को बता रही थी, ''दो रसायनज्ञों, स्वीडन के कार्ल शीले और इग्लैंड के जोज़ेफ प्रिसले ने, 1775 के आस-पास ऑक्सीजन की खोज की।'' एक छोटी लड़की ने झट से अपना हाथ उठाया और पूछा, ''ऑक्सीजन की खोज से पहले हम सांस कैसे लेते थे?'' निस्संदेह, अध्यापिका को समझाना पड़ा कि ऑक्सीजन तो हमारे वातावरण में पहले से ही मौजूद है, लेकिन हमें इसका पता नहीं था या इन रसायनज्ञों द्वारा खोज करने से पहले इसे नाम नहीं दिया गया था।

हमारा संसार दो प्रकार की वास्तविकताओं से बना है; वे वास्तविकताएं जिन्हें हम अपनी आंखों से देख सकते हैं और हाथों से छू सकते हैं, और वे जिन्हें हम देख या छू नहीं सकते। पहले वाली वास्तविकताओं को हम स्पष्ट देख सकते हैं, क्योंकि हम उनमें काम करते और उन्हें पकड़ सकते हैं। दूसरी प्रकार की वास्तविकताएं हमारे लिए स्पष्ट नहीं हैं। उनके बारे में हम बहुत कम जानते हैं। हम जानते हैं कि वे हैं, परन्तु वे कई बार हमारे विचारों की पृष्ठभूमि में ही होती हैं, हो सकता है कि हम जानते हों कि वायु में पांचवां भाग ऑक्सीजन है और यह कि उसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते, परन्तु हम इसके बारे में सोचते नहीं हैं - सांस लेते रहते हैं। हम पेन्सिल के बारे में जानते हैं, इसे देखकर हम हाथ से उठा सकते हैं और इससे लिख सकते हैं- वायु को हम देख नहीं सकते जो कि उन अदृश्य वास्तविकताओं में से ही एक है।

प्रश्न तो यह है: कुछ वास्तविकताओं को न देख सकने का यह अर्थ नहीं कि वे वास्तविक नहीं हैं। वे उन वस्तुओं की तरह ही वास्तविक हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, चाहे देख व छू न सकें।

सबसे बड़ी वास्तविकता, जिसे हम देख नहीं सकते, वह है परमेश्वर। हम अपने

इन हाथों से उसे छू नहीं सकते, परखनली में डाल कर उसका विशलेषण नहीं कर सकते, व अपनी इन आंखों से उसे देख नहीं सकते; परन्तु फिर भी वह सबसे बड़ी वास्तविकता है। वह हर एक वास्तविकता का आधार है, चाहे वह वास्तविकता दृश्य हो या अदृश्य।

एक मिशनरी कुछ लोगों को सच्चे परमेश्वर के बारे में बता रहा था। उसने परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने, उसके प्रेम और उसकी बुद्धि का वर्णन किया। एक बुजुर्ग आदमी उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। कुछ मिनट बाद वह बुजुर्ग आदमी खड़ा हो गया और पुकार उठा, ''मैं यह तो जानता था कि यह परमेश्वर है, परन्तु उसका नाम अभी तक नहीं जानता था।''

परमेश्वर हमारा सृजनहार, छुड़ाने वाला और न्यायाधीश है। जो कोई भी परमेश्वर के अस्तित्व का इन्कार करता है, या उसकी आज्ञा मानने और उसकी सेवा करने में असफल होता है, यह उसकी सबसे बड़ी भूल है। उस व्यक्ति ने मनुष्य के अस्तित्व और संसार के अस्तित्व के पीछे की महान सच्चाई का इन्कार करके अपने बनाने वाले को नकारा है। आप यह गलती मत करें! परमेश्वर को सच्चा और जीवता परमेश्वर मानें और उसकी आराधना करें; उसके सामने विनम्रता से झुक कर उसकी आज्ञा मानें।

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, और आपको अपने परिवार में आने का निमन्त्रण देता है। वह चाहता है कि इस जीवन में आप प्रतिदिन उसकी संगति में उसके साथ चलें। वह आपको अपने साथ सदा के लिए उस अनन्त नगर में ले जाना चाहता है, जिसे स्वर्ग कहते हैं।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ *231* पर)

1. ''परमेश्वर'' शब्द सही अर्थों में केवल एक ही के लिए है। क्यों?
2. पुराने नियम के उन पदों की सूची बनाएं, जिनसे परमेश्वरत्व के बारे में पता चलता हो।
3. यीशु का बपतिस्मा, मनुष्य के छुटकारे का काम, प्रार्थना और महान आज्ञा का बपतिस्मा सभी से परमेश्वर के तीन में एक होने (परमेश्वरत्व) का कैसे पता चलता है?

4. मनुष्य के लिए परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र उपलब्ध मार्ग कौन सा है?
5. कौन से पद बताते हैं कि स्वर्गदूतों, सन्तों या अन्य किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के द्वारा परमेश्वर के पास नहीं पहुंचा जा सकता?
6. प्रभु यीशु ''मनुष्य का पुत्र'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' दोनों कैसे हो सकता है?
7. यद्यपि परमेश्वरत्व के सदस्यों के बारे में बहुत कुछ है जो हम नहीं जान सकते, परन्तु बहुत कुछ है जो हम जान सकते हैं। वे तथ्य कौन से हैं जो बाइबल में बताए गए हैं?
8. इस सच्चाई से कि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया, कौन सी सच्चाइयां निकलती हैं?
9. हमारे पास क्या प्रमाण है कि परमेश्वर अपने संसार में लगातार काम करता है?
10. परमेश्वर हमारा न्याय कैसे करेगा?

शब्द सहायता

प्रेरित – वे बारह पुरुष, जिनको यीशु ने विशेष रूप से अपना संदेशवाहक चुना (मत्ती 10:2-4)। यहूदा की मृत्यु के पश्चात प्रेरित बनने के लिए मत्तियाह का नाम लिया गया (प्रेरितों के काम 1:23, 26)। बाद में, पौलुस को उन प्रेरितों में मिलाया गया (प्रेरितों के काम 9:15, 16; 1 तीमुथियुस 2:7)। यीशु ने सिखाया कि आत्मा की प्रेरणा से दी गई उसके प्रेरितों की शिक्षा के प्रचार को माना जाए (मत्ती 16:19)।

बपतिस्मा – यह शब्द एक यूनानी शब्द से लिया गया जिसका अर्थ है ''पानी में डुबोना।'' परमेश्वर ने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ठहराया। (देखिए मत्ती 28:19, 20; रोमियों 6:1, 4; प्रेरितों के काम 2:38; 8:36)।

मसीही – जो कोई मसीह के सुसमाचार की आज्ञा को मानता है।

अंगीकार – यीशु को परमेश्वर का पुत्र होने और उसे प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानने वाला किसी का कथन (देखिए प्रेरितों के काम 8:37; रोमियों 10:10; 1 तीमुथियुस 6:12)।

चेला – सीखने वाला अथवा अनुयायी। प्रेरितों 11:26 में यीशु के चेलों को सबसे पहले मसीही कहा गया।

सुसमाचार – नये नियम की चार पुस्तकें (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) जो यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने के बारे में बताती हैं।

महान आज्ञा (ग्रेट कमीशन) – यीशु की वह आज्ञा जो उसने अपने चेलों को दी कि जाकर हर एक के पास सुसमाचार का प्रचार करें (मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:15, 16)।

मध्यस्थ – जो किसी समस्या को हल करने के लिए ''बीच में आ जाता'' है। यीशु परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है। वह पाप की समस्या को हल कर देता है।

छुड़ाने वाला – जो ''वापस'' खरीद लेता है। यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा, लोगों के नाश हो रहे प्राणों को वापस खरीद लिया, अर्थात उनका मूल्य भर दिया।

समयोचित चिन्ता – मनुष्य के लिए परमेश्वर की चिन्ता और सहायता प्रदान करना। (यद्यपि नये नियम में शब्द ''समयोचित चिन्ता'' को इस तरह उपयोग नहीं किया गया परन्तु यह बाइबल की शिक्षा के अनुसार है, जैसा रोमियों 8:28 में वर्णन किया गया है)।

छुटकारा – परमेश्वर से दूर रहने के बाद ''वापस खरीदा'' जाना। मसीहियों को अक्सर ''छुटकारा पाए हुए'' कहा जाता है।

मन फिराना – किसी के सोचने के ढंग का बदलना और इस कारण उसके जीने का ढंग बदलना।

संत अथवा पवित्र लोग – नये नियम के मसीही।

उद्धार – ''पाप से छुटकारा।'' उद्धार केवल यीशु के द्वारा ही प्रदान किया जा सकता है।

उद्धारकर्त्ता – जो किसी को ख़तरे या मौत से बचाता है। यीशु, हमारा उद्धारकर्त्ता, हमें पाप और अनन्त मृत्यु से बचाता है।

[1]तीन यूनानी शब्द जिनका अनुवाद ''परमेश्वरत्व'' हो सकता है धर्मशास्त्र में केवल इन पदों में एक-एक बार ही मिलते हैं (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)। शब्द ''स्वर्गीय परिवार'' और ''त्रिएक'' धर्मशास्त्र में नहीं मिलते, और इस पाठ में हमने उनका प्रयोग केवल व्याख्या के लिए ही किया है। [2]उत्पत्ति 3:22; 11:7; यशायाह 6:8 में तीन अन्य उदाहरण मिलते हैं।